International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 38-40

आज के कथा लेखन और महिलाएं

मोनिता नेमा
शोध छात्रा (हिंदी साहित्य), बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

उपन्यास आधुनिक साहित्य का एक नव विकसित गद्य है। हिंदी साहित्य में उपन्यास का उद्‌भव उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध से माना जाता है। भारतीय परंपरावादी विद्वान यद्यपि इसके आधुनिक स्वरूप का बीजपन प्राचीन संस्कृति साहित्य की कथा आख्यायिका की परंपरा में देखते हैं और यह दावा करते हैं कि ''संस्कृत भाषा में उपन्यास भी है और औपन्यासिक वृत्ति भी"।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में देखा जाए तो उपन्यास का उद्‌भव वास्तव में यूरोप में ही हुआ है। यूरोप की विभिन्न भाषाओं में और हिंदी में उपन्यास का उदय और विकास विभिन्न कालों में भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में हुआ। अंग्रेजी, फ्रेंच और रूसी इन तीनों भाषाओं में भी उपन्यास का आविर्भाव एकाएक नहीं हो गया है, अपितु इसकी अपनी एक सतत विकासशील परंपरा रही है। इन भाषाओं के धार्मिक, रोमांटिक और काव्यात्मक कथाओं में धीरे – धीरे कुछ ऐसी प्रवृत्तियां पनपती गई है, जो आगे चलकर इस नए साहित्यग.. का स्वरूप ग्रहण करती है। हमारे संस्कृत साहित्य में भी धार्मिक साहित्य प्रचुर परिणाम में मिलता है परंतु कथा की वैसी प्रवृत्तियां नहीं मिलती जैसी – यूरोपियन भाषाओं में दिखती हैं, इसलिए यह माना जाता है कि उपन्यास के आधुनिक स्वरूप का उद्‌भव और विकास पश्चिम औपन्यासिक वृत्ति के आधार पर हुआ है। डॉ गणेशन का यह कथन महत्वपूर्ण है कि – "किंतु यह एक ध्रुव सत्य है की अतिप्राचीन काल से ही भारतीय साहित्य में कथा –कथन की परंपरा चली आ रही है। लेकिन क्या इसी परंपरा ने निरंतर क्रमिक रूप से विकसित होकर हमारे उपन्यास को जन्म दिया? यद्यपि कादंबरी आदि से उपन्यास का संबंध जोड़ा जाता है तो यह भी असंगत ही लगता है। प्राचीन कथा साहित्य को उपन्यास का आधार मानना हो तो हमें बिना टूटे क्रमशः विकसित होती आने वाली एक श्रंखलाबद्ध परंपरा प्राप्त होनी चाहिए। लेकिन ऐसी कोई परंपरा नहीं मिलती।"[1]

उसमें भी हिंदी में उपन्यास के उदय की परिस्थितियां उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में निरूपित हुई है ऐसा माना जा सकता है। इसके पूर्व का भारतीय साहित्यिक ही नहीं राजनीतिक, सामाजिक, परिदृश्य भी बहुत भिन्न था। साहित्येतिहास के कालक्रमिक अनुशीलन से भी यह देखा जा सकता है कि अपने यहां कथन की परंपरा भले ही रही हो परंतु आधुनिक औपन्यासिक प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि लगभग सन १८०० और उसके बाद ही बननी शुरू हुई। यूरोप में इसका जन्म रोमांटिक कथा साहित्य से हुआ कुछ भारतीय विद्वान इसका संबंध भारतीय प्रेम आख्यानों से जोड़ते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से प्रेमाख्यान और रोमांटिक साहित्य में प्रवृत्तिगत कुछ समानताएं भी है जैसे प्रेम और साहस का निरूपण दोनों का प्रतिपाध है, परंतु आधुनिक उपन्यास का स्वरूप भारतीय प्रेमाख्यान परंपरा की बजाय पश्चिमी रोमांटिक कथाकथन की परंपरा के अधिक नजदीक है। निस्संदेह इसकी एक बहुत बड़ी वजह वहां की तत्कालीन परिस्थितियां १९वी शती में निर्मित होनी शुरू हुई।

"प्रकृति ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को विशेष भाव – प्रवण एवं संवेदनशील बनाया है। जहां पुरुषों के लिए बुद्धिपरक विचारधारा सहज गुण वहां नारियों के मानस में श्रद्धा, विश्वास, संवेदना, सहानुभूति आदि कोमल भाव अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में प्रकृतिस्थ रहते हैं यही कारण है कि महिलाओं द्वारा प्रणीत साहित्य में ह्रदय को स्पर्श करने की क्षमता अथवा मार्मिकता का विशेष समावेश रहता है।"[2]

स्वतंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिला लेखिका ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सन १९५० से लेकर अभी तक के साहित्य को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि महिला लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के विस्तार को सदैव महत्व दिया तथा व्यक्ति, परिवार, समाज और देश में होने वाले परिवर्तन को अपनी विषय वस्तु में यथा समय स्थान दिया। साहित्य जगत में पुरुष लेखकों द्वारा निर्धारित इस मान्यता को महिला लेखिकाओं ने पूर्णतः खंडित कर दिया है कि नारी को केवल नारी के ही विषय में लिखना चाहिए, अन्य लेखन उनके बूते का नहीं है। हिंदी की आधुनिक महिला लेखिकाएं नवीन, तेजस्वी विचारों एवं लेखनी की शक्ति से संपन्न है। पंडित रामदहिन मिश्र ने लिखा है –"हिंदी साहित्य कोश में पुरुष साहित्यकारों के समक्ष अपनी अद्‌भुत प्रतिभा के साथ प्रकाशमान कुछ ऐसी देवियां है जिन्होंने अपनी प्रतिभा और कृतियों द्वारा हिंदी साहित्य में चार चांद दिए हैं, उसके मस्तक को और भी उन्नत कर दिया है। उनकी कृतियों से हिंदी साहित्य को प्रगतिशील जीवन की अनुप्रेरणा मिली है।"[3]

महिला लेखन की आरंभ काल में पुरुष लेखक, महिलाओं की रचनाओं को दोयम दर्जे का समझते थे किंतु धीरे – धीरे पुरुषों को महिला देखने की उत्कृष्टता का आभास होने लगा और कहीं – कहीं तो महिलाओं की लेखनी पुरुषों की रचनाओं से भी उत्कृष्ट प्रतीत होने लगी। अतः धीरे – धीरे पुरुष लेखकों ने महिला लेखिकाओं की रचनाओं को चुनौती देना बंद कर दिया तथा उसे वे अपने समक्ष मानते हुए समानता का दर्जा देने लगे– "स्त्री लेखन की अपनी दुनिया होती है, जो पुरुष लेखन की दुनिया से समानांतर चलती है, इतनी समानांतर भी नहीं की वह उसका स्पर्श न करें, उसे काटे भी नहीं। स्त्री से सर्वथा अलग न पुरुष की दुनिया हो सकती है और न ही पुरुष से सर्वथा अलग स्त्री की दुनिया।"[4]

फिर भी अनेक सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक कारणों से उनमें अलगाव दिखाई पड़ता है, इससे यह मालूम होता है कि महिला लेखन पुरुष लेखन से वास्तविक स्वरुप में अलग है, और इस अलगाव का प्रमुख कारण है – समाज का स्त्रियों के प्रति दोयम भाव की नीति।

आज स्त्री लेखन मजबूत से हिंदी साहित्य जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है, जिससे यह पता चलता है कि महिलाओं ने अपने संसार का विस्तार कर लिया है, वह पुरुष की ही भांति हिंदी साहित्य में अपना अलग स्थान बना चुकी है। अपने निजी अनुभवों से प्रेरित होकर जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण नवीनता लिए हैं। मानवीय समस्याओं एवं संबंधों की गुत्थी को उन्होंने अपनी मौलिक दृष्टि से सुलझाया है। जीवन जीने के लिए सकरी गलियों को त्यागकर उन्होंने चौड़ा रास्ता चुना है, यही कारण है कि समाज की सड़ी गली रीतियों को अपनाने से उन्होंने साफ इनकार कर दिया एवं अपनी लेखनी द्वारा इन पर कठोर कुठाराघात किया है, एवं उसका सामना किया है, तथा क्षेत्र विशेष से जुड़ी विसंगतियों पर निडर होकर लेखनी चलाई चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो या धार्मिक क्षेत्र हो या राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक सांस्कृतिक इनकी लेखनी में कहीं विराम नहीं लगा। इन महिला लेखिकाओं का कथा साहित्य यथार्थ की भूमि से सीधा जोड़ा है यही कारण है कि इन्होंने जीवन के यथार्थ पक्ष का चित्रण पूरी तन्मयता के साथ किया है। जीवन के विविध क्षेत्रों में नारी पुरुष की भागीदारी स्त्री – पुरुष संबंध दांपत्य जीवन इत्यादि के विषय में इन महिला लेखिकाओं का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट है इनकी मन में किसी प्रकार की उलझन को कोई स्थान नहीं है। विवाह बेमेल विवाह, पुनर्विवाह, अंतरजातीय विवाह, विधवा विवाह और विभाग से जुड़ी प्रथाओं को लेखक इनके विचार स्पष्ट हैं, यह किसी भी प्रकार के परिवेश से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व की स्थिति में अपने मत को बखूबी व्यक्त करने में सक्षम है। यह सत्य है कि कार्य क्षेत्र की विभिन्नता के कारण पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव कम ही पड़ता है, अतः उनके कथा विषयक पुरुषों की अपेक्षा कुछ सीमित से ही संबंधित होते हैं। तात्पर्य यह है कि आधुनिक महिला लेखिकाओं ने स्त्रियों के जीवन से जुड़े विविध पक्षों को अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य में स्थान देने में सफलता अर्जित कर ली है, साथ ही नई–नई अनुभूति को अभिव्यक्ति दी है तथा लेखन के क्षेत्र में पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ा है। स्वतंत्रता पश्चात की महिला लेखिकाओं ने समकालीन स्त्री समस्याओं को ही प्रमुखता से उठाया है, इनकी प्रमुख विषय वस्तु स्त्री समस्या, शोषण, अशिक्षा, महिलाओं को प्रताड़ित करने वाली कुरीतियां, धार्मिक अंधविश्वास एवं स्त्री जागरण की प्रमुख रहा है। कुछ लेखिकाओं ने ग्रामीण परिवेश को माध्यम बनाया है तो कुछ ने शहरी समस्याओं का ताना बाना बुना है।

नारी की अपनी सत्ता महत्ता रही है। पाश्चात्य विचारक ला लामर्टिना के शब्दों में सभी महान कार्यों के आरंभ में नारी का हाथ रहा है। महादेवी वर्मा के शब्दों में– "नारी लेखन मास – पिंड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षयशील भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ह्रदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है।"[5] स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक है सही है, किंतु वे दो ऐसे छोर हैं जो सृष्टि के क्रम को बनाए हुए हैं। शारीरिक दृष्टि से जिस तरह नारी – अंगों का झुकाव कठोरता की ओर है। इसी प्रकार मानसिक दृष्टि से जहां पुरुष में विजय की भूख होती है, नारी में समर्पण की। पुरुष जहां लूटना चाहता है, स्त्री वही लुट जाना चाहती है, फिर भी वह स्नेह व सौजन्य की प्रतिमूर्ति होती है, वह वाणी से जीवन का अमृतमय कर देती है। उसका ह्रदय संतप्तों को शीतल कर देता है और उसका हास्य निराशा की कालिका को पोछकर आशा की किरण.. बिखेरता है। यदि नारी वर्तमान के साथ भविष्य को भी हाथ में ले ले, तो वह अपनी शक्ति से बिजली की तड़प को भी लज्जित कर सकती है। आदि काल से नारी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुष के साथ चलती रही है। अधिकांश सभ्यताएं और संस्कृतिया अपने आदिम युग में मात्र समता प्रधान रही हैं।

आज युग बदल चुका है, तंत्र बदल चुका है, किंतु विभिन्न क्षेत्रों में नारियों कि अनिवार्यता उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व उनकी राजनीतिक, प्रशासनिक लेखकीय, सामाजिक एवं ग्राहस्थिक क्षमता अक्षुण्ण हीं नहीं दिन प्रतिदिन विवर्धमान है। झांसी की रानी व दुर्गावती की परंपरा ने तारकेश्वरी सिद्धा पंडारनायके, नंदिनी सतपंथी, इंदिरा गांधी का रूप लिया है। वही लोपामुद्रा एवं गार्गी की परंपरा ने सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, शिवानी से लेकर आज तक की अनेकानेक महिला लेखिकाओं का रूप धारण कर लिया है।

आज उपन्यास लेखिकाओं की संख्या अत्यधिक है और इन लेखिकाओं में से अधिकांश उपन्यास लेखन के क्षेत्र में साहस का परिचय दे रही हैं । इसमें संदेह नहीं, विषय विविध की दृष्टि से यह उपन्यास बहुआयामी है, किंतु महिला उपन्यासों का सर्जन अपेक्षाकृत धीमी गति से हुआ है यह भी सत्य है कि १९४७ से लिखे गए उपन्यासों का आकलन यदि हम करें तो देखेंगे कि पिछले दशक में लेखिकाओं द्वारा जितने उपन्यास लिखे गए उतने ही उपन्यास इस शताब्दी के आरंभ के पिछले दशक के पूर्व तक लिखे गए होंगे।

वस्तुतः हिंदी उपन्यासों को उषा देवी मित्रा ने प्रेम के उदात्त स्वरुप को अपना आधार बनाया तथा निरूपित किया नारी त्याग और बलिदान से प्रेरित होकर जीवन में प्रेम की निष्ठा बनाए रखती है। सम्मोहित, नष्टनीढ़, जीवन की मुस्कान, बचपन का मोल, प्रिया सोहनी आदि अनेक कृतियां उषा देवी मित्रा एक के पश्चात एक हिंदी साहित्य जगत को देती रही। श्रीमती मित्रा के उपन्यास घटना प्रसंगों के चित्रण में जीवन में मनुष्य की कोमल कृतियों के अंकन में सहज, भावुकता, पूर्ण स्थानों में मर्मस्पर्शी और शिल्प विधान में समसामयिक उपन्यासकारों से भिन्न एवं नवीन हैं। आगे चलकर सुभद्रा कुमारी चौहान ने कथा साहित्य में योगदान दिया । किंतु मूलतः कवित्री थी। पुनः उनका कथा लेखन केवल कहानियों तक ही सीमित रहा। वस्तुतः आज हिंदी उपन्यास लेखिकाओं की परिगणना उषा देवी मित्रा से कर सकते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात महिला लेखन में विशेष गति आती है। नवा दशक इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस दशक में महिला कथाकारों की रचनाओं में नारी अस्मिता की खोज बड़ी गहराई से की गई है, और महिला लेखन में इस दृष्टि से आगे बढ़ा है। हिंदी उपन्यासों में महिला उपन्यासकारों से समाज को प्रमुखता दी गई है। मंजुल भगत, शिवानी, कृष्णा सोबती, आदि अनेक महिला उपन्यास लेखिकाएं हैं, जिन्होंने सामाजिक विचारों को उपन्यासों में स्थान दिया है।

साठोत्तरी काल में महिला उपन्यासकारों ने उच्च कोटि की ह्रदयस्पर्शी रचनाएं रचित की है। यहां यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि महिलाओं से संबंधित पारिवारिक समस्याओं को ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु सजगता दिखाई और बहुत तेजी से परिवर्तन होते हुए समाज की तत्कालीन समस्याओं को लेखकीय दृष्टि से देखा तथा समाज के उत्थान के लिए अपनी सक्रिय भूमिका कलम के माध्यम से निभाई यह पूर्ण सत्य है कि कोई भी कथाकार महान तभी माना जाता है जब कि वह अपनी रचनाओं से स्वयं को युगदृष्टा और युगदृष्टा युग सृष्टा की दोहरी भूमिकाओं में सफलतापूर्वक सिद्ध कर जाता है।

साठोत्तरी काल में महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में स्त्रीत्व जो की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है वह एक सामान्य सी प्रथा है एवं

उसे समझने के लिए भारतीय सामाजिक, भारतीय समाज की संरचना एवं संस्कृति को समझना नितांत आवश्यक है। साठोत्तरी काल में महिला उपन्यासकारों ने अगर महिला जागरण के विषय में इतनी सजगता नहीं दिखाती तो निश्चित ही भारतीय नारी को पहचानने की, उससे अस्तित्व को स्वीकारने की, तथा उसे नवीन दृ ष्टि देने की महती योजनाएं नहीं बनी होती।

इस कालखंड में महिला उपन्यासकारों ने भारतीय समाज में प्रविष्ट हो चुके पाश्चात्य विचारधारा को तेजी से बदलती संस्कृति एवं सभ्यता को तथा स्त्री पुरुष के संबंधों को, स्त्री समानता के अधिकार को, सजगता से उठाया है। साठोत्तरी भारतीय समाज में धार्मिक अंधविश्वास, कुरीतियों के प्रति विरोध, बढ़ते अंतरजातीय विवाह कोमा नेता इत्यादि विचारों ने नैतिक मूल्यों में अनेक अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किए, जिससे कि इस कालखंड की महिला पुरुष की मौलिक क्षमताएं समान है, तथापि सामाजिक संरचना की विषमता एवं स्वाभाविक विशेषताओं के कारण उनमें रुचि भेद नैसर्गिक है यही रूचिभेद महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में भी दिखाई देता है। साहित्य क्षेत्र में स्त्रियों का आना अत्यंत आवश्यक है इसीलिए भी था क्योंकि पुरुषों के अंतर्मन को आसानी से पढ़ सकते थे, समझ सकते थे, किंतु जब नारी अंतर्मन की बात आती थी तो केवल कल्पना से ही काम चलाते थे ।स्त्रियों के लेखन आरंभ करने के बाद नारी अंतर्मन की कोमल भावनाएं अधिक मजबूती से उजागर होने लगी।

साठोत्तरी प्रमुख महिला लेखिकाओं ने अपने रचना संसार में समाज को व्यवहारिक जीवन का आईना दिखाते हुए नित्य जीवन में होने वाली कठिनाइयों को प्रमुखता से लिखते हुए समाज को जागृत करने में अपना महती योगदान प्रदान किया।

हिंदी साहित्य के विकास में महिलाओं के योगदान को विशेष रेखांकित किया गया है। जिसके दो प्रमुख कारण वर्णित हो सकते हैं – प्रथम महिलाओं की लेखनी के कारण हिंदी साहित्य जगत में व्यावहारिक पक्ष के साथ–साथ भावनात्मक पक्ष भी उजागर होता है। द्वतीय कथा साहित्य के सर्वांगीण अध्ययन में सुलभता। आमतौर पर महिलाओं ने लिखने में कहानीयो एवं उपन्यासों को ही प्रमुखता प्रदान की है, किंतु हिंदी साहित्य के विकास यहां के लिए यह अत्यंत ही आवश्यक है कि साहित्य जगत के मूल्यांकन के अवसर पर महिलाओं के समय योगदान को महत्व दिया जाए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही ऐसी अनेक महिला लेखिकाएं साहित्य साधना में लीन है, जिन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा के द्वारा हिंदी साहित्य जगत को विकासोन्मुख किया है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी उपन्यास का इतिहास : गोपाल राय, पृष्ठ संख्या – १२८-१२६, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग :डॉ.उर्मिला गुप्ता, पृष्ठ संख्या –०२।
3. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग : डॉ. उर्मिला गुप्ता, पृष्ठ संख्या – ५।
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ बच्चन सिंह, पृष्ठ संख्या – ३8, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।
5. दीपशिखा : महादेवी वर्मा, भूमिका से।